राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

अनुशासनमेवैकं, सर्वसौख्यप्रदायकं ।
तस्मिँस्तु विकृते नूनं, दुःखमेव प्रजायते ॥१५॥

एकमात्र अनुशासन ही सब सुखों को देने वाला हुआ करता है। परन्तु उस अनुशासन के बिगड़ जाने पर निश्चित रूप से दुःख ही उत्पन्न होता है।

Only discipline can bring all kinds of happiness. But if the discipline deteriorates, then sorrow will surely follow.

अनुशासनमेवैकं , ऐक्य – सूत्रे निबद्धकम् ।
सैनिकास्तद् विना किं स्युर्, एकीभूताः कदाचन ?॥१६॥

एक मात्र अनुशासन ही एकता सूत्र में बाँध कर रखने वाला है । क्या कभी सैनिक अनुशासन के बिना एक होकर रह सकते है ?

Only discipline can bring unity. Can the soldiers ever act as one without the discipline?

अनुशिष्टः स्वयं नास्ति, तथाऽन्यं यो दिदृक्षते ।
दिने गणयितुं तारा, उद्यमं स करोति हि ॥१७॥

जो स्वयं तो अनुशासन में रहने वाला है नहीं और दूसरे को उस तरह के अनुशासन में देखना चाहता है, वह तो दिन में तारे गिनने का उद्यम करता है ।

The one who is not disciplined but wants others to be disciplined is like the person who is counting the stars in the day time.

अन्तः–शुद्धिं विना किं न, बाह्य–शुद्धिर् निरर्थिका ?।
शुभ्रं किं सविषं दुग्धं, नास्ति प्राणहरं क्वचित् ?॥१८॥

बिना भीतरी शुद्धि के क्या बाहरी शुद्धि निरर्थक नहीं होती ? क्या बाहर से शुभ्र दीखने वाला भीतर विष से भरा हुआ दूध कहीं प्राण हरने वाला नहीं होता ?

Isn't the outside cleanness senseless without the inner one? Will not the poisoned milk take a life even if it looks pure from outside?

अन्धं नयति चेदन्धस्, तत्कल्याणं कदापि न ।
स्वेन सार्धं तमन्धं स, पातयत्येव निश्चितम् ॥१९॥

यदि अन्धा अन्धे को ले चलता है, तो उसका कल्याण कभी नहीं है। वह अपने साथ उस अन्धे को भी निश्चित रूप से गिरा देता है ।

The blind one will not prosper if led by a blind person. He will surely perish with the other blind person (They will surely perish together).

अन्धानुकृति – मात्रेण, स्वीया हानिः पदे पदे ।
अतस्तदेव कर्तव्यं, यतो राष्ट्र–हितं भवेत् ॥२०॥

दूसरों का अन्धानुकरण करने से अपनी ही कदम कदम पर हानि होती है । अतः वह ही करना चाहिये, जिससे राष्ट्र का हित हो ।

One faces harm on every step by blindly following others. Therefore, only that should be done what if beneficial for the country.

अन्नपूर्णां तिरस्कृत्य, यस्तां पीडयते जनः ।
नष्टस्तस्य तु लोकोऽयं, पर–लोकोऽपि नश्यति ॥२१॥

जो अन्नपूर्णा पत्नी का तिरस्कार करके उसको पीड़ित करता है, उसका यह लोक तो नष्ट हो चुका है, साथ ही परलोक भी नष्ट हो जाता है ।

The one who creates a problem for the Annapurna (wife) by mocking her, destroys not only this but also the other world.